Global Axis
International journal of Multidisciplinary Studies
Website - globalaxisjournal.org

पर्यावरणीय संरक्षण में साहित्यिक अवदान : एक विशेष अध्ययन

डॉ. शैल कुमारी अहिरवार, प्रभारी प्राचार्य, सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय मझगवां जिला - सतना [म. प्र.]
Email – shailkumariahirwar@gmail.com

सारांश :– वतर्मान में पर्यावरण अखिल विश्व के सामने एक गहरे संकट के रूप में विद्यमान है। वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, गंभीर प्रदूषण, जैव विविधता की क्षति तथा नैसर्गिक संपदा का बेतशाहा दोहन मानवता के वजूद के लिए समस्या पैदा कर रहे हैं। ऐसे दौर में साहित्यिक सृजन सिर्फ मनोरंजन का विषय न होकर सामाजिक विवेक का सामर्थ्यवान माध्यम बनकर प्रकट होता है। साहित्य मनुष्य और प्रकृत के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का काम करता है। भारत के साहित्य में वेद, उपनिषद, पुराणों से लेकर वर्तमान हिंदी साहित्य तक प्रकृत और पर्यावरणीय सुरक्षा का गहरा सामंजस्य दिखाई देता है। कई साहित्यकारों ने प्रकृति को सिर्फ सुंदरता के रूप में न देखकर, उसे जीवनप्रदायिनी और सांस्कृतिक रूप में प्रदर्शित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से पर्यावरणीय सुरक्षा में साहित्य के प्राककथन का विवेचन किया गया है। साथ ही हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों के द्वारा पर्यावरनीय चेतना के रूपविधान को स्पष्ट किया गया है।

मुख्य शब्द :– पर्यावरण, प्रकृति, साहित्य, संरक्षण, हिंदी साहित्य, पर्यावरण चेतना, ।

भूमिका :– प्रर्यावरण मानवता का आधार स्तंभ है। जल, वायु, पृथ्वी, वनस्पति, जीव-जंतु तथा प्राकृतिक संसाधनों से मिलकर पर्यावरण का निर्माण होता है। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही प्रकृति का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिसके कारण पर्यावरण असंतुलन उत्पन्न हुआ । आज वैश्विक ताप में वृद्धि, जल संकट, प्रदूषण तथा प्राकृतिक आपदाएँ इसी असंतुलन का नतीजा हैं । पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—चारों ओर से घेरने वाला वातावरण। इसमें प्राकृतिक एवं सामाजिक दोनों तरह के तत्त्व सम्मिलित होते हैं। पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं—वायु, जल, भूमि, वन एवं वनस्पति, जीव-जंतु,मानव समाज , इन सभी घटकों के बीच संतुलन बनाए रखना पर्यावरण संरक्षण का मूल उद्देश्य है । साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है । यह समाज की मुसीबतों, भावनाओं तथा चेतनाओं को व्यक्त करता है । पर्यावरण आफ़त के क्षण विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से प्रकृति की हिफ़ाज़त का पैगाम दिया है । साहित्य में प्राकृतिक प्रेम,संरक्षण और संवेदना की अनुभूति प्राचीन समय से विद्यमान है । भारत की संस्कृति में प्रकृति को देवतुल्य माना गया है । पृथ्वी को धरा-माता, नदियों को माता तथा वृक्षों को जीवनदाता के रूप में चित्रित किया गया है ।

अद्यतन काल में पर्यावरणीय बोध का प्रसार, साहित्य के माध्यम से विस्तृत रूप से हुआ है। कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास तथा लोक साहित्य ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनमानस के मध्य जागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

पर्यावरण और साहित्य का संबंध :– साहित्य एवं पर्यावरण का सम्बन्ध बहुत प्राचीन एवं घनिष्ठ है । मानव जीवन का आरंभ प्रकृति के आंचल में हुआ और प्रकृति के अनुभवों से ही साहित्य का विकास हुआ । प्रकृति ने साहित्य को प्रतीक, बिंब, विषय तथा चेतना भेंट की है । भारतीय साहित्य में प्रकृति सिर्फ सौंदर्यता का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह मानव अनुभूति की सहयात्री है। साहित्यकारों ने प्रकृति को जीवित सत्ता के रूप में दर्शाया है। साहित्य में पर्यावरणीय चेतना निम्न रूपों में व्यक्त होती है —

प्रकृति प्रेम – प्रकृति के प्रति आदर, सहृदयता और सुर की भावना रखना। जब मानव प्रकृति से संबद्ध होता है, तब उसके अन्तर्भाग में, संवेदना और समन्वय का विकास होता है। प्राचीन भारत की संस्कृति में प्रकृति को पूजनीय माना गया है । सरिताओं को माता, वृक्षों की पूजा और पहाड़ों को पवित्र समझा गया । यह हमारी परंपरा का प्रकृति के प्रति अटूट प्रेम दर्शित करता है ।

भारतीय साहित्य और पर्यावरणीय चेतना – स्वर्ण युग के साहित्य में प्रकृति को परमेश्वर की रचना मानकर उसका सम्मान किया गया। तुलसीदास, कबीर, सूरदास और मीरा जैसे कवियों ने प्रकृति को आध्यात्मिक अनुभव से जोड़ा । तुलसीदास ने रामचरितमानस में जंगल और प्रकृति के महत्व को अत्यंत संवेदना से प्रस्तुत किया है । राम जी का वनवास केवल वृत्तांत का भाग नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ मनुष्य के समन्वय का प्रतीक है ।

संत आदि कवियों ने यह उपदेश दिया कि मानव को प्रकृति के साथ संयत जीवन जीना चाहिए। इनके साहित्य में नदियों–जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के प्रति करुणा और सह-अस्तित्व की भावना दिखाई देती है ।

छायावादी साहित्य और प्रकृति :– छायावादी काव्य को प्रकृति का काव्य माना जाता है । प्रसाद, पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा ने प्रकृति को अत्यंत भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया । सुमित्रानंदन पंत....पंत प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाते हैं । उनकी रचनाओं में हिमालय, पर्वत, वन, नदी तथा फूलों का विलक्षण वर्णन मिलता है । वे प्रकृति को मानव जीवन का हृदय मानते

Global Axis International Journal of Multidisciplinary Studies

हुए उसे चित्रित करते है। नौका विहार कविता में उन्होंने प्रकृति और मानव का अद्भुत समन्वय स्थापित किया है। 'कविता संग्रह' पल्लव का अंश है, यह कविता..... चाँदनी रात में गंगा नदी में नौकायन का वर्णन करते हुए, कवि ने प्रकृति और मानव जीवन की तुलना की है –

(१) इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम,

शाश्वत है गति, शाश्वत संगम।

शाश्वत नभ का नीला-विकास, शाश्वत शशि का यह रजत-हास,

शाश्वत लघु-लहरों का विलास।

हे जग-जीवन के कर्णधार! चिर जन्म-मरण के आर-पार,

शाश्वत जीवन-नौका-विहार।

(२) हरियाली से ढंक मृदु गात,

कानों में भर सौ सौ बात ;

हम झुलाते हैं अविराम

विश्व –पुलक से तरु के पात,

कुसुमित –पलनों में अभिराम।

पंत जी ने प्रकृति को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। लहरें, नदी, चाँदनी और पवन मानो मनुष्य की भावनाओं से जुड़कर एक मीठा संगीत उत्पन्न कर रहे हों। कविता में प्रकृति के प्रति सौंदर्यबोध,प्रेम और मानव-हृदय की बोधगम्यता का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है। सरिता का स्वच्छ पावन जल, उसकी अल्पभार लहरें, धीमी गति से चलती नाव, ठंडी पवन तथा चारों तरफ बिखरी हरियाली वातावरण को मनमोहक बना देती है। नभ में बिखरी चाँदनी और जल में उसकी आकृति दृश्य को और भी मनोहर बना देता है। कवि प्रकृति की इस सुंदरतम आभा में डूबकर आत्मिक प्रसन्नता और अमन का अनुभव करता है। प्रकृति की मनोहरिता और उसकी सजीवता का चित्र प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं कि पेड़-पौधे हरियाली से छुपे हुए हैं और उनका कोमल गात बहुत सुंदर दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति अपने मीठे संदेश से सबके कानों में कई बातें कह रही हो। वृक्षों के पत्ते पूरे विश्व को हर्ष और उल्लास से भरते हुए लगातार झूम रहे हैं। फूलों से लदे हुए ये पेड़ ऐसे लगते हैं मानो सुंदर पालनों की तरह आत्मा को आनंद देने वाले हों। वही कवयित्री महादेवी वर्मा ने पशु-पक्षियों के प्रति दया और सहानुभूति व्यक्त की। उनकी रचना 'गिल्लू' पर्यावरणीय संवेदना का अच्छा उदाहरण है। गिल्लू' में कौवों की हलचल, सोनजुही की लता, और गिल्लू के साहचर्य के माध्यम से प्रकृति का मर्मस्पर्शी और सप्राण वर्णन किया गया है। इस कहानी में प्रकृति चित्रण के साथ ही पशु-प्रेम का अनूठा दार्शनिक भाव भी देखने को मिलता है। निराला – निराला जी की कविताओं में प्रकृति के साथ सामाजिक चेतना का समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने प्रकृति को मानव जीवन की शक्ति के रूप में देखा। एक ओर फाल्गुन मास की भाव्य प्राकृतिक सुंदरता चित्रित करने है, तो दूसरी ओर संसार में बहुत दिनों से बारिश न होने के कारण धरा सूख गई है, तब कवि बादलों से आग्रह करते हैं कि हे काले – काले बादलों बरस कर, बरसों से प्यासी धरा को तृप्त कर दो, ताकि मानवता का संकट दूर हो, सूखे हुए पेड़ – पौधे और लताएं पुनः हरी – भरी होकर पुलकित हो जाए –

(१) कहीं सांस लेते हो,

घर – घर भर देते हो,

उड़ने को नभ में तुम

पर – पर कर देते हो,

आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।

(२) विकल–विकल, उन्मन थे उन्मन

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो:

बादल, गरजो !

Global Axis International Journal of Multidisciplinary Studies

कवि निराला जी कहते हैं कि फाल्गुन के महीने में प्रकृति इतनी अधिक आकर्षक और रंग-बिरंगी हो गई है कि उसकी सुंदरता "अट" अर्थात समा नहीं रही है। चारों तरफ फूल खिले हैं, मनमोहक सुगंध फैली हुई है और वातावरण उल्लास से भर गया है। प्रकृति मानो नवयुवती की तरह सज-सवर कर मुस्कुरा रही हो। कवि ने मधुऋतु के प्रभाव को मनुष्य के जीवन से जोड़कर बताया है कि जैसे प्रकृति में नयापन आता है, वैसे ही व्यक्ति से के जीवन में भी जोश और उल्लास का संचार होता है।

कथा साहित्य में पर्यावरण :- हिंदी कहानियों तथा उपन्यासों में भी पर्यावरणीय समस्या का यथार्थ चित्रण मिलता है। कई साहित्यकारों ने, वन विनाश, जलसंकट तथा प्रदूषण को अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

फणीश्वरनाथ रेणु :- रेणु जी के साहित्य में ग्राम्य जीवन और प्रकृति का घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'मैला आंचल' जो विशेष तौर पर आंचलिकता की बात करता है, जिसका मुख्य केंद्र 'मेरीगंज' गांव है इसके द्वारा उन्होंने उस गांव की संस्कृति, रहन-सहन, गरीबी और समस्याओं को उद्धृत किया है। उनकी रचनाएँ ग्रामीण संस्कृति और पर्यावरण हिफ़ाज़त की प्रेरणा देती हैं। रेणु जी की कहानी के कुछ अंश–

खेतों में काम करनेवालों ने कहा "पागल" है जहां की चाहां बैठकर बजाने लगता है।"

बहुत दिनों के बाद लौटा है।"

हम तो समझते थे कहीं मर खप गया।"

रसप्रिया की सुरीली रागिनी ताल पर आकर कट गई।"

मिरदंगिया का पागलपन अचानक बढ़ गया।"

इस कहानी के माध्यम से रेणु जी ने, हमारी सांस्कृतिक धरोहर वाद्य यंत्रों की महत्ता पात्र के माध्यम से प्रतिपादित की है।

इधर कोसी मैया आपने तीव्र वेग में बह रही है, क्षण – क्षण में मूर्छा खाकर गिरती और फिर उठती, बहती जा रही है। रास्ते में जो भी पेड़ पौधें पत्थर बालू आते है उन्हें भी अपने साथ बहाकर ले जा रहे हैं–

थर – थर कांपे धरती मैंया,रोए जी आकाश,

घड़ी – घड़ी पर मूर्छा लागे, बेर – बेर पियास,

घाट न सूझे, बाट न सूझे, सूझे न अप्पन हाथ...।

इस प्रकार उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से संस्कृत और प्रकृति का अद्भुत समन्वय वर्णित किया है।

लोक साहित्य और पर्यावरण संरक्षण :– लोक साहित्य जो ग्रामीण परिवेश को दर्शाने का काम करता है पर्यावरण जागरूकता का सबसे पुरातन और प्रभावशाली माध्यम है। लोकगीतों, लोककथाओं और लोक परंपराओं के द्वारा व्यक्ति व प्रकृति का घनिष्ठ संबंध रहा है। ग्रामीण समाज में, नदी पूजा, वृक्षारोपण तथा वर्षा से संबंधित लोकगीत पर्यावरण सुरक्षा की भावना को मजबूत करते हैं।

बुंदेली, बघेली, अवधी और भोजपुरी लोक साहित्य में प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। नदी, खेत, पशु-पक्षी और ऋतुओं का सुंदर चित्रण लोक संस्कृति की पर्यावरण चेतना को अभिव्यक्त करता है। पर्यावरण से संबंधित जो भी आंदोलन हुए हैं उसमें कविताओं और लोकगीतों का विशेष महत्व रहा है इन कविताओं और गीतों के माध्यम से जनता को जागृत तथा सचेत किया गया।

पर्यावरणीय संकट और साहित्य की वर्तमान प्रासंगिकता :– वर्तमान समय में पर्यावरण विपदा वैश्विक संकट बन चुका है। वैज्ञानिक युक्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक और साहित्यिक बोध भी आवश्यक है। साहित्य मनुष्य के हृदय को प्रभावित करता है और उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रेरणा देता है।

डिजिटल जमाने में पर्यावरण विषयक साहित्य का प्रचार–प्रसार तेजी से हो रहा है। सोशल मीडिया लेखन, कविता, ब्लॉग, तथा लोकभाषाओं का साहित्य पर्यावरणीय जागरूकता की वृद्धि में सहायक सिद्ध हो रहा है।

विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरणीय साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकता है।

निष्कर्ष:– पर्यावरणीय सुरक्षा में साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्य जनमानस और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने का काम करता है। भारतीय साहित्य की प्रथा में प्रकृति को जीवन, संस्कृति और आध्यात्म का आधार माना गया है।

पुरातन वैदिक साहित्य से लेकर अर्वाचीन हिंदी साहित्य तक पर्यावरण संज्ञान निरंतर विकसित होती रही है। साहित्यकारों ने प्रकृति प्रेम, जल संरक्षण, वृक्ष संरक्षण, मृदा संरक्षण तथा जैव विविधता की रक्षा का संदेश दिया है।

वर्तमान समय में जरूरत इस बात की है कि साहित्य को पर्यावरण शिक्षा का शक्तिशाली माध्यम बनाया जाए। आधुनिक साहित्य , लोक साहित्य, और शैक्षिक पाठ्यक्रमों के द्वारा पर्यावरण चेतना का प्रसार किया जा सकता है। साहित्य सिर्फ शब्दों का भंडार नहीं, बल्कि मानवता और प्रकृति के संरक्षण का माध्यम भी है।

Global Axis International Journal of Multidisciplinary Studies

इस तरह कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय संरक्षण में साहित्य की उपलब्धि केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक, और वैश्विक स्तर पर बहुत महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची:-

1. सिंह, नामवर 'कविता के नए प्रतिमान' प्रकाशन, राजकमल नई दिल्ली।
2. डॉ. हरिमोहन, 'पर्यावरण और हिंदी साहित्य' , प्रकाशन, तक्षशिला।
3. पंत, सुमित्रानन्दन, 'पलन' प्रकाशन, इडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयागराज- पृ. 61।
4. पंत, सुमित्रानन्दन 'गुजन', प्रकाशन, लोक भारती इलाहाबाद।
5. 5, वर्मा, महादेवी 'मेरा परिवार', प्रकाशन, लोक भारती इलाहाबाद।
6. त्रिपाठी, निराला सूर्यकांत, 'अनामिका' द्वितीय संस्करण , भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पृ. 82।
7. वहीं।
8. रेणु फणीश्वर नाथ 'चुनी हुई रचनाएं' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, पृ.74।
9. रेणु फणीश्वर नाथ 'परती: परिकथा' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, ।
10. स्वयं का सर्वेक्षण।

Global Axis International journal of Multidisciplinary Studies